नवभारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

आत्मनिर्भर किसान की दिशा में महत्वपूर्ण कदम

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को 'प्रधानमंत्री धन-धान्य कृषि योजना' का शुभारंभ करते हुए भारतीय कृषि की दिशा और दशा बदलने का एक नया अध्याय खोला है. यह योजना न केवल किसानों की आय बढ़ाने की दृष्टि से ऐतिहासिक है, बल्कि यह उन 100 जिलों के लिए जीवनरेखा साबित हो सकती है, जो अब तक कृषि उत्पादकता के मामले में पिछड़े रहे हैं. देश के इन जिलों में कृषि उत्पादकता को राष्ट्रीय औसत तक लाने का लक्ष्य इस योजना का केन्द्रीय उद्देश्य है. छह वर्षों की अवधि के लिए रु. 24,000 करोड़ के वार्षिक परिव्यय के साथ यह योजना लगभग 1.7 करोड़ छोटे और सीमांत किसानों को सीधे लाभान्वित करेगी. प्रधानमंत्री मोदी का यह निर्णय स्पष्ट करता है कि उनकी सरकार केवल घोषणाओं तक सीमित नहीं, बल्कि किसानों की जमीन पर बदलाव लाने की ठोस कार्यनीति पर काम कर रही है. इस योजना के माध्यम से केंद्र सरकार ने एक साथ कई कृषि चुनौतियों पर प्रहार किया है, सिंचाई की कमी, फसल विविधीकरण की कमी, भंडारण सुविधाओं का अभाव, और कृषि ऋण की जटिल प्रक्रिया. अब ड्रिप और स्प्रिंकलर सिंचाई को बढ़ावा देकर जल प्रबंधन को टिकाऊ बनाया जाएगा, वहीं पंचायत और ब्लॉक स्तर पर आधुनिक भंडारण केंद्र विकसित किए जाएंगे ताकि फसल कटाई के बाद होने वाली बर्बादी रोकी जा सके.

सबसे उल्लेखनीय बात यह है कि 'प्रधानमंत्री धन-धान्य कृषि योजना' आकांक्षी जिला कार्यक्रम के सिद्ध मॉडल से प्रेरित है. जैसे आकांक्षी जिलों में शिक्षा, स्वास्थ्य और बुनियादी ढांचे में उल्लेखनीय सुधार हुआ, वैसे ही अब इन कृषि जिलों में उत्पादन, आय और आत्मनिर्भरता के नए मानक स्थापित होंगे. सरकार ने कृषि, पशुपालन, डेयरी और सहकारिता के 11 मंत्रालयों की योजनाओं को एक समन्वित ढांचे में जोड़कर एकीकृत विकास की दिशा में बड़ा कदम उठाया है.

कृषि केवल फसल उत्पादन तक सीमित नहीं है; यह ग्रामीण भारत की आजीविका का केंद्र है. इसलिए प्रधानमंत्री ने इसके साथ 'दलहन आत्मनिर्भरता मिशन' भी लॉन्च किया है, जिस पर रु. 11,440 करोड़ खर्च होंगे. इसका उद्देश्य भारत को दालों के उत्पादन में आत्मनिर्भर बनाना है, ताकि देश की प्रोटीन सुरक्षा सुनिश्चित हो और किसानों को लाभकारी मूल्य प्राप्त हो.प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में बीते दस वर्षों में किसानों के लिए कई दूरगामी सुधार किए गए हैं, जैसे पीएम-किसान सम्मान निधि, ई-नाम प्लेटफॉर्म, फसल बीमा योजना, जैविक खेती और सहकारिता मंत्रालय की स्थापना. अब 'प्रधानमंत्री धन-धान्य कृषि योजना' इन सभी प्रयासों को एक व्यापक ढांचे में जोड़ती है.

भारत की कृषि आत्मा गांवों में बसती है, और जब गांव सशक्त होंगे तो राष्ट्र समृद्ध होगा. यह योजना उसी दृष्टि की प्रतीक है. यदि राज्य सरकारें और स्थानीय निकाय इस मिशन को गंभीरता से लागू करें, तो अगले कुछ वर्षों में देश के पिछड़े जिले भी 'धान्यवान' बन सकते हैं. प्रधानमंत्री धन-धान्य कृषि योजना' वास्तव में किसान को आत्मनिर्भरता, सम्मान और समृद्धि की ओर ले जाने वाली दिशा है, जहां खेतों में केवल अनाज नहीं, बल्कि विश्वास और भविष्य की रोशनी भी उगेगी.

आखिर बिहार में ऊंट किस करवट बैठेगा?

बढ़-चढ़कर बांटी जा रहीं रेवड़ियां

लगभग हर चुनाव में देखने को मिल रहा है कि मुफ्त की रेवड़ियां, विशेषकर कल्याण योजनाएं, नगदी वितरण का रूप लेने लगी हैं. यह वास्तव में पैसा बांटकर वोट खरीदने का ही प्रयास मात्र है. मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने बिहार में भी यही तकनीक अपनाई है ताकि सत्ता विरोधी लहर और बेरोजगारी पर विपक्ष की आलोचना से बचा जा सके. नीतीश हर घर को प्रति माह 125 यूनिट बिजली मुफ्त दे रहे हैं, उन्होंने बेरोजगार युवकों को दो वर्ष तक 1,000 रुपये प्रतिमाह देने की घोषणा की है और विधवाओं व बुजुर्गों को दी जाने वाली मासिक सामाजिक सुरक्षा पेंशन 400 रुपये से बढ़ाकर 1,000 रुपये कर दी है.

मुख्यमंत्री महिला रोजगार योजना के तहत जीविका गुटों से जुड़ी 75 लाख महिलाओं को 10,000 रुपये प्रति महिला देने का वायदा है ताकि विपक्ष ने जो 2,500 रुपये प्रति माह महिलाओं को देने का वायदा किया है, उसे काउंटर किया जा सके. साथ ही बिहार राज्य जीविका निधि क्रेडिट को-ऑपरेटिव फेडरेशन भी लांच किया गया है, जो कि 7 प्रतिशत के कम ब्याज दरों पर जीविका गुटों के सदस्यों को ऋण देगा. आशा व ममता श्रमिकों के भत्ते में भी वृद्धि की गई है और पंचायतीराज व सिविक बॉडीज में महिलाओं का आरक्षण 50 प्रतिशत किया गया है. दूसरी ओर विपक्ष ने वायदा किया है कि वह हर माह 200 यूनिट बिजली मुफ्त देगा, हर शख्स का 25 लाख रुपये का मुफ्त मेडिकल बीमा होगा और भूमिरहित व्यक्तियों को 5 डेसिमल भूमि घर के लिए दी जायेगी.

बिहार में जाति का महत्व हमेशा से ही रहा है, शायद यही सबसे महत्वपूर्ण है. जाति भावनात्मक है, मतप्रयोग को प्रभावित करती है, एक नेता के प्रति हमदर्दी और दूसरे के प्रति नफरत उत्पन्न करती है. बिहार का हर नेता जाति की अहमियत को समझता है, इसलिए ही वहां जाति जनगणना करायी गई और दिल्ली को भी मजबूर होकर देशव्यापी जाति जनगणना कराये जाने की घोषणा करनी पड़ी, सवाल यह है कि इस बार के बिहार विधानसभा चुनाव में जाति का खेल कैसा रहेगा?

राजद के नेता तेजस्वी यादव ने कहा है कि अगर उनका महागठबंधन सत्ता में आता है, तो सरकार बनाने के 20 दिन के भीतर कानून बनाया जायेगा कि हर परिवार के कम से कम एक सदस्य को राज्य में सरकारी नौकरी मिले. यहां मुख्यत: तीन प्रश्न बहुत महत्वपूर्ण हो जाते हैं. एक, क्या इन मुफ्त की रेवड़ियों से बिहार का कल्याण व विकास हो जायेगा? दो, अगर यह बिहार के लिए इतनी ही आवश्यक हैं, तो नीतीश कुमार इन पर चुनाव के समय ही गौर क्यों कर रहे हैं, जबकि वह वर्षों से राज्य की सत्ता पर काबिज हैं?

तीसरा यह कि क्या बिहार नागरिक इस लालच में आकर अपने मत का प्रयोग करेंगे? बिहार का औसत नागरिक औसत भारतीय की तुलना में एक के तिहाई से भी कम कमाता है. उद्योग के नाम पर बिहार लगभग शून्य है. जाहिर है मुफ्त की रेवड़ियों से बिहार की स्थिति में सुधार नहीं आने जा रहा है. विकास के लिए ठोस योजनाएं बनानी व लागू करनी होती हैं. नीतीश कुमार के पास अपने रिपोर्ट कार्ड में दिखाने के लिए कुछ नहीं है कि बिहार के विकास के लिए उन्होंने यह काम किये. उनकी सारी ऊर्जा इसी बात में लगी रही कि वह किस जुगाड़ से मुख्यमंत्री की कुर्सी पर बने रहें. आज वह राजनीति की ऐसी अनिश्चित पिच पर बल्लेबाजी कर रहे हैं कि वह किस गेंद पर आउट हो जाएं या कर दिये जाएं, उन्हें मालूम नहीं. उन्हें मुफ्त की रेवड़ियों का सहारा लेना पड़ रहा है.

ज्ञात रहे कि नीतीश कुमार की सियासी प्रासंगिकता लालू प्रसाद यादव को काउंटर करने के लिए थी? लेकिन अब तो लालू ही बिहार की राजनीति में धुंधली सी याद बनकर रह गए हैं. इसलिए तेजस्वी यादव मतदाताओं को यह विश्वास दिलाने की कोशिश में लगे हुए हैं कि जब शासन की बात आती है, तो वह अपने पिता के पुत्र नहीं हैं, उनकी अपनी आधुनिक शैली है. इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि भारत में चुनाव शायद ही किसी एक मुद्दे से तय होते हैं.

✍ नौशाबा परवीन

विन्ध्य की डायरी

संघ प्रमुख का सदी सन्देश स्वयंसेवकों के लिए नजीर

डॉ. रवि तिवारी

पिछले कुछ दशकों से सत्ता के लिए नजीर बन रही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघ चालक की कही हर बात का असर स्वयंसेवकों में इतना जल्दी प्रभावी होता है. जितना लोग अपने घर के अभिभावक की बात पर गम्भीर नहीं होते. यह संयोग ही था कि संघ प्रमुख डॉ मोहनराव भागवत ने अपने शताब्दी वर्ष के संकल्पों का श्री गणेश विन्ध्य की माटी से किया. राजनीतिक दृष्टि से उर्वर पर विकास में पिछड़े विन्ध्य में संघ के बटवृक्ष ने अपनी छाया के आगोश में आजादी के बाद लिया पर देखते ही देखते उसकी शाखा ने न सिर्फ मजबूती कायम की बल्कि न जाने कितनी नई

शाखा का ऐसा विस्तार किया कि अब जड़ की चर्चा कोई नहीं करता. अब शायद पंच संकल्पों का चिंतन मनन कर लोग वहाँ तक पहुँचे जहाँ से विन्ध्य में इस बटवृक्ष का विस्तार शुरू हुआ है. तीन पीढियों के इस अंतर को कैसे पटा जाएगा यह अभी समय के गर्भ में हैं. लेकिन संकल्पों के पक्के स्वयंसेवकों पर भरोसा है कि वे इस लक्ष्य तक जरूर पहुचेंगे. डॉ भावगत ने अपने दो दिनी प्रवास में देश भरके सिंधी समाज को संगठित रह अपने मूल को न भूलने की सलाह दे एक बार फिर इस विषय मे चेतना पैदा कर दी है. राजनीति से हमेशा दूर रहने का दावा करने वाले संघ के प्रमुख ने क्षेत्र के नेताओ से प्रवास के दौरान बराबर दूरी बनाकर यह भी जता दिया कि उनकी नजर में दिग्गज नेताओं की स्थिति स्वयंसेवक से ज्यादा नही है.

कब गठित होगी कांग्रेस की कार्यकारिणी

संगठन सृजन अभियान के मंथन से जिला कांग्रेस अध्यक्ष तो निकल आए पर अभी तक जिला कार्यकारिणी गठित नही हो पाई है. कहीं न कहीं अध्यक्षों को लेकर चल रहे असंतोष और उठापटक की आग के ठंडा होने का इंतजार किया जा रहा है. कांग्रेस को डर है कि चारो तरफ असंतोष के साथ विरोध की आग दहक रही है. ऐसे में कार्यकारिणी अगर घोषित की गई तो ज्वालामुखी फूट पड़ेगा. पहले से ही एक वर्ग विशेष विरोध के साथ चिंतन बैठक कर रहा है. दूसरी तरफ जिलाध्यक्षों की परिक्रमा कार्यकर्ता कर रहे है. कार्यकारिणी में स्थान पाने के लिये हर संभव प्रयास में जुटे हुए है. अध्यक्षो के लिये कार्यकारिणी में समन्वय और संतुलन बनाना सबसे बड़ी चुनौती होगी. दरअसल विंध्य में जाति के इर्दगिर्द राजनीति घूमती है और जातीय समीकरण संतुलन का विशेष ध्यान रखना होगा ताकि किसी वर्ग में असंतोष फिर से न पनपे जो आगे चलकर पार्टी के लिये नुकसान दायक साबित हो.

विधायक को सता रहा ईडी का डर

विंध्य के सबसे चर्चित फायर कांग्रेस विधायक को ईडी का डर इस समय सता रहा है. हालाकि यह डर उनका नया नही है, विधानसभा चुनाव के दौरान भी उन्होने ईडी की छापेमारी की आशंका जाहिर की थी. स्थानीय मंत्री से लेकर सरकार पर लगातार निशाना साधने वाले सेमरिया विधायक अभय मिश्रा ने अब अपने घर और व्यवसायिक प्रतिष्ठानो में छापेमारी की आशंका जाहिर की है. उनके परिवार से जुड़ी कम्पनियों के बैंक खाते सीज किये गये है. इसी घटनाक्रम को आगे चलकर छापा की कार्यवाही से जोड़ते हुए विधायक ने कहा कि कई दिनों से धमकियां आ रही हैं, सरकार और उपमुख्यमंत्री के खिलाफ बोलना बंद करो, अन्यथा नुकसान हो जाएगा. इसके पहले भी इस तरह से सनसनी खेज आरोप विधायक लगाते रहे है. भाजपा नेताओं ने पलटवार करते हुए कहा कि वह अपनी सुविधा के अनुसार आरोप लगाते रहते है.

मोबाइल बताए टाइम, फिर भी घड़ी जरूरी

यूं तो मोबाइल में तुरंत टाइम दिख जाता है, लेकिन रिस्टवॉँच का महत्व कम नहीं हुआ, बल्कि बढ़ता ही जा रहा है. वजह यह है कि घड़ी फैशन स्टेटमेंट है और पहनने वाले की हैसियत दिखाती है. पहले स्विस वॉचेस के लोग दिवाने थे. तब फेवरल्यूबा, सैंडोज, रोलेक्स जैसे नाम लोकप्रिय थे. जापानी घड़ी सीको भी पसंदीदा रही है. टाइटन हर वर्ष 16 मिलियन रिस्टवॉच बनाती है. उसने प्रोडक्शन में स्विस उद्योग को पीछे छोड़ दिया है. रिस्टवॉच मर्द की ज्वेलरी है. एबसोल्यूट लग्जरी वॉच के दाम 10 लाख रुपए से शुरू होते हैं. एस्पायरेशन लग्जरी वॉच 5 से 10 लाख तक में आती है तथा एक्सेसिबल लग्जरी वॉच 5 लाख से नीचे की कीमत पर उपलब्ध है. लोग अपनी संपन्नता दिखाने और शौक की वजह से 3 लाख से लेकर 20 लाख तक की लग्जरी वॉच पहनने लगे हैं. जब कोरोना महामारी आई थी तो घबराए हुए लोगों ने अपना पल्स रेट, ब्लडप्रेशर, दिल की धड़कन जानने के लिए स्मार्ट वॉच पहनना शुरू कर दिया था. अब फिर से एनालॉग वॉच का बाजार तेज हो गया है. एक ऐसा भी वक्त था जब राष्ट्रीय स्वाभिमान को देखते हुए हैदराबाद मशीन टूल्स ने एचएमटी वॉचेस बनाई थीं जिन्हें पहनकर लोग स्वदेशी पर गर्व करते थे. एचएमटी की घड़यां किफायती व अच्छी थीं लेकिन बाद में उसका प्रोडक्शन बंद हो गया. पहले घड़ी में रोज चाबी भरनी पड़ती थी जिससे लोगों को ध्यान रखना पड़ता था कि घड़ी बंद न हो जाए. इससे दिमागी कसरत होती थी. फिर बैटरी वाली ऑटोमैटिक वॉचेस आ गईं. घड़?यों का इतिहास पुराना है. पहले सूर्य की धूप चढ़ने से समय का अंदाज लगाने के लिए धूप घड़ी बनाई गई फिर रेत घड़ी या सैंड क्लॉक बनी जिसमें एक शीशे के पात्र से दूसरे पात्र में धीरे-धीरे रेत गिरकर समय बताती थी. फिर पेंडुलम वाली वॉल क्लॉक बनी जिनमें हफ्ते में एक बार चाबी भरनी पड़ती थी.

महात्मा गांधी कलाई पर घड़ी नहीं पहनते थे बल्कि कमर में बांधा करते थे. वह वेस्ट क्लॉक या जेबी घड़ी कहलाती थी जिसे अंग्रेज वेस्टकोट की जेब में रखा करते थे. पं. नेहरू घड़ी का डायल कलाई के सामने न रखकर अंदर की तरफ रखते थे. शौकीन व धनवान लोग रोलेक्स, कार्टियर, पिकेट, ओमेगा, पटेक फिलिप, टैग ह्यूअर, अरमानी जैसी रिस्टवॉच पसंद करते हैं.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

चुनाव चक्र की मजबूत धुरी मुफ्तखोरी और सीनाजोरी

पड़ोसी ने हमसे कहा, निशानेबाज, देश में कहीं भी चुनाव हो, वह चोरी, सीनाजोरी और मुफ्तखोरी की धुरी पर चलते हैं. लोकतंत्र की आड़ में वोटों की सौदेबाजी होती है. हार्सट्रेडिंग या घोड़ाबाजार ने लोकतांत्रिक मूल्यों को गहरा नुकसान पहुंचाया है.

हमने कहा, आप इतना ज्यादा मुंह खोलेंगे तो लोग आपको अर्बन नक्सल कहने लगेंगे. अपनी बात अपने मन में रखिए और जैसा सिस्टम चल रहा है, उसके साथ आंख मूंदकर चलिए. वोटों की चोरी का घिसा हुआ रिकार्ड कब तक बजाएंगे?

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, पहले उम्मीदवार वोट मांगने जाता था तो दीदी को राम-राम और बड़ी बी को सलाम कहता था, अब सीधे फ्रीबीज या मुफ्त की खैरात देकर बोट खरीदे जाते हैं. पार्टी खुशी से देती है और पब्लिक मजे से रिसीव करती है. खजाना खाली हो जाए तो कोई बात नहीं, मुफ्त का चंदन घिस कर जनता के माथे पर लगाया जाता है. मुफ्त की चीजें और खैराती अनुत्पादक योजनाएं देने का राजनीतिक दबाव इतना बढ़ गया है कि तमाम राज्यों का बजट घाटा निरंतर बढ़ता चला जा रहा है. देश के लगभग 1 दर्जन राज्यों की यही हालत है. यह भविष्य के लिए खतरनाक है. बिहार में भी ऐसी ही चुनावी बयार बह रही है. जिन महिलाओं को स्वयंरोजगार शुरू कर आत्मनिर्भर बनने के नाम पर एकमुश्त 10,000 रुपए दिए जा रहे हैं, वह खा-पीकर खत्म हो जाएंगे. महिला का हस्बेंड उस रकम का बैंड बजा डालेगा.

हमने कहा, आप इतने जले भुने तरीके से बातें क्यों कर रहे हैं? मतदाताओं को प्रभावित करने और उनका दिल जीतने के लिए रेवड़ी तो बांटनी ही पड़ती है. मीठी रेवड़ी के लिए कोई तिल सक्रांत आने की प्रतीक्षा क्यों करे? जहां चुनाव वहां रेवड़ी! याद कीजिए कि मुफ्त चीजें देने का राजनीतिक हथकंड़ा 2006 में डीएमके ने तमिलनाडु में शुरू किया था. वहां गरीबों को टीवी सेट और 2 रुपए किलो चावल देकर करुणानिधि सत्ता में आए थे. फिर जयललिता उनसे भी चार कदम आगे निकल गई. उन्होंने अम्मा कैंटीन, अम्मा फार्मसी जैसी अनेक योजनाओं की बदौलत चुनाव जीता. छत्तीसगढ़ में बीजेपी के डा. रमनसिंह मुफ्त चावल देकर सत्ता में आए थे. छत्तीसगढ़ी भाषा में लोग उन्हें चाउंरवाले बाबा कहने लगे थे. मध्यप्रदेश में लाडली लक्ष्मी और महाराष्ट्र में लाडकी बहन योजना ने कमाल दिखाया.

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12048

- डॉ. सागर खादीवाला

1		■	2	3		■	4
	■	5			■	6	
7	8	■	9		10	■	
11		12		■	13	14	
■	■		■	15			■
16	17	■	18	■	19		20
21		■	22	23	■	24	
	■	25				■	

ऊपर से नीचे

1. असम का एक जिला 2. पूरा जानकार, समर्थ 3. लेकिन, परंतु, घड़ियाल 4. भरत के पुत्र तक्ष की राजधानी का नाम 8. नदी या समुद्र का सामने वाला तट, छोर, सिरा 10. वह पथरीला मैदान जहां पेड़ आदि न हो (उर्दू) 12. हृदय, मन 14. सैर करने का स्थान (उर्दू) 16. निकलना, उद्य, उन्नति 17. पीली लंबी गोल वस्तु, टोटी 18. बलपूर्वक, जबरदस्ती 20. गति (उर्दू) 23. परिषद

बाएं से दाएं

1. देह, शरीर 2. दुष्ट, कमीना, पापी 5. एक प्रकार का मृग, मयूर, हंस, बाज, शंख, रंगा हुआ 6. कुशल, निपुण 7. चांदी, सफेद घोड़ा 9. विष, जहर 11. परोपकार, दूसरे के लिए लाभकारी 13. कपाय स्वाद वाला 15. सम्मान 16. %उस% का बहुवचन 19. ऊंचा किनारा 21. समूह, झुंड, गुट 22. एक प्रकार का नाट, नटक, जूस, रसा, शोरबा 24. सप्ताह 25. बिगड़ा हुआ भाग्य

Solution 12047

स	मु	धि	त	■	अ	प	च
व्य	ष्टि	■	क्ष	मा	या	च	ना
सा	क	न	■	त	ल	ना	■
धी	■	फ	त	ह	■	गा	य
■	औ	र	■	त	स्वी	र	■
क	र	त	ब	■	का	■	बा
मा	त	■	ती	मा	र	दा	री
ई	■	पै	सा	■	ना	न	क

ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में यात्रा होगी, सफलता मिलेगी, पद और प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, राजनैतिक गतिविधियों का योग है, वर्ष के मध्य में दाम्पत्य जीवन में कलह की स्थिति न आने दें, यात्रा होगी,वर्ष के अन्त में स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें, दिनचर्या में व्यवधान उत्पन्न हो सकता है.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को भौतिक सुख साधनों की उपलब्धता रहेगी, उत्तरदायित्वों को संभालना पड़ेगा, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को व्यापार में सफलता मिलेगी, यात्रा में कष्ट होगा, कर्क राशि के व्यक्तियों को मित्रों से मतभेद होगा, सिंह राशि के व्यक्तियों को आय में सुधार होगा, धार्मिक कार्यो में व्यस्तता रहेगी, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को उन्नति होगी, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को शत्रु पक्ष पर विजय प्राप्त होगी, अध्ययन में रूचि रहेगी.मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों का मनोबल बना रहेगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक विशेष चंचल तथा मिलनसार होगा, नेतृत्व करने की क्षमता रहेगी, किसी तरह की शिक्षा प्राप्त होगी, नौकरी तथा व्यवसाय दोनों में अग्रणी होगा, माता पिता के प्रति स्नेह रहेगा, आय के एक से अधिक साधन होंगे.

उदयकालीन ग्रह चाल

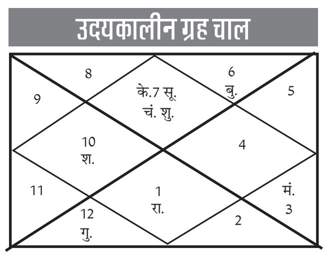

पंचांग

रा.मि. 21 संवत् 2082 कार्तिक कृष्ण सप्तमीं चन्द्रवासरे शाम 5/48, आर्द्रा नक्षत्रे शाम 6/26, परिघ योगे दिन 2/45, विष्टि करणे सू.उ. 6/14, सू.अ. 5/46, चन्द्रचार मिथुन, शु.रा. 3, 5, 6, 9, 10, 1 अ.रा. 4, 7, 8, 11, 12, 2 शुभांक- 5, 7, 1.

व्यापार भविष्य

कार्तिक कृष्ण सप्तमीं को आर्द्रा नक्षत्र के प्रभाव से गुड़, खांड, सरसों, अरंडी, के भाव में तेजी होगी, जीरा,धनियां, लौंग, मैथी, की चाल मंदी की रहेगी, सोना, चांदी, में स्थिरता रहेगी, लालमिर्च, पदार्थो में घट-बढ़ के साथ पूर्व की चाल चलेगी. भाग्यांक 2660 है.

मेष- अधिकारियों से बातचीत में सावधानी रखें, नये लोगों के साथ मेलजोल बढ़ेगा, आकस्मिक धन लाभ होगा, पेंडिंग पडे कार्य बनेंगे.

वृषभ- आकस्मिक खर्च मेंवृद्धि होगी, घरेलू समस्या के समाधान से सुकून मिलेगा, आत्म विश्वास से अपनी बात रखें. परिश्रम करने पर सफलता मिलेगी.

मिथुन- वाणी पर नियंत्रण रखें, साझेदारी में नया कार्य शुरू कर सकते हैं, नियोजित कार्य में सफलता मिलेगी, मन में हर्ष रहेगा, प्रियजनों के कारण खर्च होगा.

कर्क- तनाव की स्थिति स्वास्थ्य के लिये हानिकारक रहेगी, खर्च पर काबू रखें, लेनदेन में सावधानी रखें, नवीन कार्य उपहार आदि की प्राप्ति होगी.

सिंह- कार्य विस्तार की योजना को धक्का लगेगा, वक्त पर धन की व्यवस्था होना मुश्किल है, मित्रता उपयोगी रहेगी, खानपान में सावधानी रखें.

कन्या- जमीन जायजाद, कोर्ट कचहरी से संबंधित कार्यों में अवरोध दूर होंगे, यश मिलेगा. पारिवारिक जीवन में संतोष बना रहेगा, लाभ होगा.

तुला- लेखन, अध्ययन के कार्यो में रूचि रहेगी, मित्र मिलन होगा, नौकरी में संबंधित अधिकारी का सहयोग मिलेगा, स्वास्थ्य संबंधी चिन्ता होगी.

वृश्चिक- सहयोगी जोश देखकर कार्य मेंसहयोग करेंगे, कार्यस्थल पर आपकी उपस्थिति प्रभावी रहेगी, गुप्त शत्रुओं पर विजय मिलेगी, परिश्रम अधिक होगा.

धनु- जरूरतमंदों की मदद करके आप खुश होंगे, व्यवसाय की समस्या दर होगी, गुमी वस्तु मिलने का योग है, विवादों को टालना हितकर रहेगा.

मकर- परिवार के साथ मौजमस्ती में समय बीतेगा, सहयोगी नाराज हो सकते हैं,आत्म विश्वास से अपनी बात रखें. नई योजना की शुरूआत होगी.

कुम्भ- कार्य निपटाने का दबाव रहेगा, अनपेक्षित कार्यों में सुख शांति मिलेगी, अधिकारी सहयोग करेगा, निजी दायित्वों की पूर्ति होगा, मनोनुकूल काम बनेगा.

मीन- घरेलू समस्याका समाधान होगा, राजनैतिक क्षेत्र में प्रयास करने पर सफलता मिलेगी, अधिकारी वर्ग सहयोग करेंगे, शुभ समाचार प्राप्त होगा.

SUDOKU 7180

	4		7		1			3
3		5		4		1		
	2				8			
4		3						
	8			2			1	
						8		6
			2				3	
		9		8		2		4
1			4		6		9	

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7179

9	2	7	4	8	6	5	3	1
5	1	6	3	2	9	4	8	7
3	4	8	7	1	5	9	6	2
8	3	4	9	5	1	2	7	6
7	6	5	8	4	2	3	1	9
1	9	2	6	3	7	8	5	4
6	7	3	2	9	8	1	4	5
2	8	1	5	7	4	6	9	3
4	5	9	1	6	3	7	2	8